• बाल कविताएं...

अगड़म-बगड़म

अगड़म-बगड़म गए बाजार
वहां से लाए मोती चार,
दो मोती थे टूटे-फूटे
बाकी दो हाथों से छूटे,
अगड़म-बगड़म दोनों रूठे!
आगे आया नया बाजार
पीं-पीं बाजा, सीटी चार,
लेकर बोले अगड़म-बगड़म-
लिख लो, यह सब रहा उधार
पैसे कल ले लेना यार!
अगड़म उछल-उछलकर चलता
बगड़म फिसल-फिसलकर बढ़ता,
पीछे पड़ गए कुत्ते चार-
कूद गए पानी में दोनों,
झटपट पहुंचे नदिया पार!
अगड़म रोता इधर खड़ा है
बगड़म भी उखड़ा-उखड़ा है,
अब ना पीं-पीं, अब ना बाजा
फूटा घुटना, फूट गया सिर-
टूट गया किस्से का तार!

■ प्रकाश मनु

अपना घर

मां, क्या हो सकता है ऐसा
जादू वाला घर हो अपना,
जहां धूप हो उसी दिशा में
घर का दरवाजा हो अपना?
हो न अंधेरा, रहे उजाला
जहाँ बना हो अपना घर,
मां, बतलाऊं सच्ची-सच्ची
मुझे रात को लगता डर।

■ प्रभाकिरण जैन

• चुटकुले...

दो महिलाएं बात कर रही थीं...
पहली बोली (चिंकी)– बहुत साल पहले एक बाबा ने कहा था कि भगवान तुझे इतना देगा कि संभाला नहीं जाएगा!
दूसरी महिला – तो क्या हुआ...
पहली महिला (चिंकी) – अब पता चला वो वजन की बात कर रहा था।

पति– तुमने तो सुबह कहा था कि रात के खाने में दो ऑप्शन होंगे। यहां तो एक ही सब्जी दिख रही है?
पत्नी– ऑप्शन अभी भी दो हैं।
पति– वो कैसे?
पत्नी– खाना है तो खाओ नहीं तो रहने दो।

• जानकारी...

प्लेन में हेडलाइट...

वैश्विक स्तर पर आज के समय हवाई जहाज से यात्रा करने वाले यात्रियों की संख्या तेजी से बढ़ी है। इसका सबसे बड़ा कारण एयरलाइंस कंपनियों की बढ़ोत्तरी और दाम कम होना है। लेकिन बीते कुछ सालों में हवाई हादसों के बाद से ही आम इंसानों के मन फ्लाइट को लेकर तमाम सवाल आते हैं। जिसमें एक सवाल ये भी है कि फ्लाइट में कितनी हेडलाइट होती हैं और इनके खराब होने पर क्या होता है। आज हम आपको इसका जवाब देंगे।

आज के वक्त फ्लाइट से यात्रा करना आसान हो चुका है। यात्रियों के फ्लाइट से यात्रा करने के पीछे कि एक वजह ये भी है कि कई दिनों की यात्रा मात्र चंद घंटों में पूरी हो जाती है। लेकिन क्या आप ये जानते हैं कि फ्लाइट में हेडलाइट कितनी होती है और पायलट को आसमान में रास्ता कैसे पता चलता है. आज हम आपको इसके बारे में बताएंगे।

अब सवाल ये है कि आखिर फ्लाइट में कितने हेडलाइट और उसके मोड होते हैं और उनके खराब होने पर क्या फ्लाइट रास्ता भटक जाता है। इसका जवाब है नहीं। आसमान में फ्लाइट के लाइट का कोई खास काम नहीं होता है। क्योंकि एयर ट्रैफिक कंट्रोलर द्वारा फ्लाइट के पायलट को रास्ता बताया जाता है। इसके अलावा फ्लाइट में कई तरह के हेडलाइट भी होते हैं। जी हां, आपको सामने जो एक हेडलाइट दिखता है, उसमें कई अन्य लाइट भी लगी होती हैं। आइए जानते हैं कि कब किस लाइट का होता है इस्तेमाल।

ये लाइट्स हवाई जहाज के टैक्सी मोड यानी जमीन पर दौड़ते हुए प्रयोग की जाती हैं. ये 150 वोल्ट्स की लाइट्स हवाई जहाज को रनवे देखने में मदद करती हैं। जैसे ही पायलट टैक्सी लाइट जलाता है तो रनवे पर लगीं लाइट्स चमक उठती हैं।

टैक्सी लाइट के साथ ही टेक ऑफ लाइट भी लगी होती हैं और ये टैक्सी लाइट से ज्यादा चमकीली होती हैं। इन्हें हवाई जहाज के टेकऑफ के समय जलाया जाता है। टेक ऑफ लाइट टैक्सी लाइट से ज्यादा दूर तक रोशनी फेंकती हैं।

रनवे टर्न ऑफ लाइट का एंगल और भी चौड़ा होता है। यह लाइट्स रनवे पर पायलट को पूरा रास्ता सही तरह से देखने में मदद करती हैं।

हवाई जहाज के पंख की हिफाजत बहुत जरूरी है। इसीलिए टेक ऑफ के समय पर अंधेरे में भी हवाई जहाज की पूरी आकृति स्पष्ट समझ में आ सके, विंग स्कैन लाइट्स को लगाया जाता है. साथ ही बादलों के बीच से उड़ते हुए पायलट इन्हीं लाइट्स की मदद से यह देख पाता है कि कहीं पंखों पर बर्फ तो नहीं जमी है।

जब हवाई जहाज जमीन पर रहता है तो उसकी साफ सफाई करने वाले क्रू के लिए एंटी कोलिजन बीकन लाइट्स लगाई जाती हैं। ये लाइटें हवाई जहाज के पहले इंजन के शुरू होने के साथ जलाई जाती हैं और आखिरी इंजन के बंद होने के साथ बंद होती हैं. जिससे ग्राउंड क्रू को पता चल सके की अब हवाई जहाज पूरी तरह से बंद हो गया है।

• पंचतंत्र की कहानी

हमेशा सोच समझ कर काम करो

बुद्धि, ज्ञान और प्रतिभा के सब गुण निर्धनता के तुषार में कुम्हला जाते हैं। जैसे पतझड़ के झंझावात में मौलसरी के फूल झड़ जाते हैं, उसी तरह घर–परिवार के पोषण की चिन्ता में उसकी बुद्धि कुन्द हो जाती है।

घर की घी–तेल–नकक–चावल की निरन्तर चिन्ता प्रखर प्रतिभा–संपन्न व्यक्ति की प्रतिभा को भी खा जाती है। धनहीन घर श्मशान का रुप धारण कर लेता है। प्रियदर्शना पत्नी का सौन्दर्य भी रुखा और निर्जीव प्रतीत होने लगता है...

दक्षिण प्रदेश के एक प्रसिद्ध नगर पाटलीपुत्र में मणिभद्र नाम का एक धनिक महाजन रहता था। लोक-सेवा और धर्म कार्यों में रत रहने से उसके धन-संचय में कुछ कमी आ गई, समाज में मान घट गया। इससे मणिभद्र को बहुत दुःख हुआ। दिन-रात चिन्तातुर रहने लगा। यह चिन्ता निष्कारण नहीं थी। धनहीन मनुष्य के गुणों का भी समाज में आदर नहीं होता।

उसके शील-कुल-स्वभाव की श्रेष्ठता भी दरिद्रता में दब जाती है। बुद्धि, ज्ञान और प्रतिभा के सब गुण निर्धनता के तुषार में कुम्हला जाते हैं। जैसे पतझड़ के झंझावात में मौलसरी के फूल झड़ जाते हैं, उसी तरह घर-परिवार के पोषण की चिन्ता में उसकी बुद्धि कुन्द हो जाती है। घर की घी-तेल-नकक-चावल की निरन्तर चिन्ता प्रखर प्रतिभा-संपन्न व्यक्ति की प्रतिभा को भी खा जाती है। धनहीन घर श्मशान का रुप धारण कर लेता है। प्रियदर्शना पत्नी का सौन्दर्य भी रुखा और निर्जीव प्रतीत होने लगता है। जलाशय में उठते बुलबुलों की तरह उनकी मानमर्यादा समाज में नष्ट हो जाती है।

निर्धनता की इन भयानक कल्पनाओं से मणिभद्र का दिल कांप उठा। उसने सोचा, इस अपमानपूर्ण जीवन से मृत्यु अच्छी है। इन्हीं विचारों में डूबा हुआ था कि उसे नींद आ गई। नींद में उसने एक स्वप्न देखा। स्वप्न में पद्मनिधि ने एक भिक्षु की वेषभूषा में उसे दर्शन दिये, और कहा 'कि वैराग्य छोड़ दे। तेरे पूर्वजों ने मेरा भरपूर आदर किया था। इसीलिये तेरे घर आया हूँ। कल सुबह फिर इसी वेष में तेरे पास आऊँगा। उस समय तू मुझे लाठी की चोट से मार डालना। तब मैं मरकर स्वर्णमय हो जाऊँगा। वह स्वर्ण तेरी गरीबी को हमेशा के लिए मिटा देगा।'

सुबह उठने पर मणिभद्र इस स्वप्न की सार्थकता के संबन्ध में ही सोचता रहा। उसके मन में विचित्र शंकायें उठने लगीं। न जाने यह स्वप्न सत्य था या असत्य, यह संभव है या असंभव, इन्हीं विचारों में उसका मन डांवाडोल हो रहा था। हर समय धन की चिन्ता के कारण ही शायद उसे धनसंचय का स्वप्न आया था। उसे किसी के मुख से सुनी हुई यह बात याद आ गई कि रोगग्रस्त, शोकातुर, चिन्ताशील और कामार्त्त मनुष्य के स्वप्न निरथक होते हैं। उनकी सार्थकता के लिए आशावादी होना अपने को धोखा देना है।

मणिभद्र यह सोच ही रहा था कि स्वप्न में देखे हुए भिक्षु के समान ही एक भिक्षु अचानक वहां आ गया। उसे देखकर मणिभद्र का चेहरा खिल गया, सपने की बात याद आ गई। उसने पास में पड़ी लाठी उठाई और भिक्षु के सिर पर मार दी। भिक्षु उसी क्षण मर गया। भूमि पर गिरने के साथ ही उसका सारा शरीर स्वर्णमय हो गया। मणिभद्र ने उसका स्वर्णमय मृतदेह छिपा लिया।

किन्तु, उसी समय एक नाई वहां आ गया था उसने यह सब देख लिया था। मणिभद्र ने उसे पर्याप्त धन-वस्त्र आदि का लोभ देकर इस घटना को गुप्त रखने का आग्रह किया। नाई ने वह बात किसी और से तो नहीं कही, किन्तु धन कमाने की इस सरल रीति का स्वयं प्रयोग करने का निश्चय कर लिया। उसने सोचा यदि एक भिक्षु लाठी से चोट खाकर स्वर्णमय हो सकता है तो दूसरा क्यों नहीं हो सकता। मन ही मन ठान ली कि वह भी कल सुबह कई भिक्षुओं को स्वर्णमय बनाकर एक ही दिन में मणिभद्र की तरह श्रीसंपन्न हो जाएगा। इसी आशा से वह रात भर सुबह होने की प्रतीक्षा करता रहा, एक पल भी नींद नहीं ली।

-जारी

• रोचक...

आग का रंग

अगर आपको गौर से देखेंगे को आग में भी कई रंग होते हैं। जैसे घर के चूल्हे में जलने वाले आग का रंग नीला जैसा होता है। वहीं लकड़ी पर जलने वाले आग का रंग पीला होता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि आग के कई रंग होते हैं। अगर आग का कलर लाल है और सघनता कम है। ऐसे में आग का टेंपरेचर 500 डिग्री सेंटीग्रेड से कम हो सकता है। इसके अलावा लाल रंग की अग्नि का टेंपरेचर 525 से 900 डिग्री सेंटीग्रेड तक हो सकता है। वहीं अगर आग का कलर ऑरेंज और चमकदार लाल है, तो तापमान 1000 डिग्री सेंटीग्रेड तक हो सकता है। अगर आपको ऑरेंज कलर की आग और इसमें पीला रंग भी दिखाई दे रहा है, तो आग का तापमान 1100 से 1200 डिग्री सेंटीग्रेड तक जा सकता है।

• लव हार्मोन...

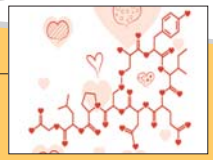

ऑक्सीटोसिन को लव हार्मोन कहा जाता है। यह एक हार्मोन है, जो शरीर में प्राकृतिक रूप से बनता है। यह हार्मोन रोमांटिक लगाव और यौन उत्तेजना के लिए जिम्मेदार होता है। इसके अलावा यह सामाजिक संपर्कों में भी अहम भूमिका निभाता है। इतना ही नहीं यह प्यार मां का बच्चे के प्रति, लाइफ पार्टनर का एहसास, कपल का प्यार किसी तरह का हो सकता है। इस तरह की फीलिंग्स के बाद ऑक्सीटोसि हार्मोन दिमाग में हाइपोथैलेमस के नीचे वाले हिस्से में मौजूद पीयूष ग्रंथि से निकलता है। इसलिए ऑक्सीटोसिन हार्मोन को लव हार्मोन कहा जाता है।